Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278,
https://www.srjis.com/issues_data/223
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, *OCT-NOV 2023, Vol-11/60*

फाँस : एक समीक्षात्मक अध्ययन

सुनील कुमार कुशवाहा
भोध छात्र, हिन्दी विभाग डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल, उत्तराखण्ड, ई –मेल : sk2357313@gmail.com

Paper Received On: 12 April 2024

Peer Reviewed On: 28 May 2024

Published On: 01 June 2024

'फाँस' रचना क्रम की दृश्टि से संजीव का नौवाँ उपन्यास है। इसका प्रका ान सन् 2015 ई0 में वाणी प्रका ान दरियागंज नई दिल्ली से हुआ है। एक तरह से यह उपन्यास कृशक जीवन की महागाथा को द ार्शाता है। इसमें महाराश्ट्र राज्य के विभिन्न असिंचित क्षेत्रों के विदर्भ किसानों की दीन–हीन द ा का वर्णन है। इसके प्रमुख पात्रों में ि ाव ांकर, भाकुन्तला, विजयेन्द्र, सुनील, सिंधु ताई, मोहन दादा, भुभा, अ ाोक, कलावती, नाना आदि हैं जबकि इसके गौण पात्रों में सरस्वती, पाटिल, खुदाबख्श, सदानन्द, सुनंदा, जफरूल, भाम्सुल, आ ाा, सुरे ा आदि हैं। संभवतः संजीव ऐसे पहले उपन्यासकार हैं जिन्होंने प्रेमचन्द के गोदान के बाद कृशक जीवन की समस्या को अपने फाँस नामक उपन्यास में उठाया है। आखिर यह सोचने वाली बात है कि सबका पेट भरने व तन ढकने वाला किसान खुद भूखा, नंगा और लाचार क्यों होता है। फाँस के सम्बन्ध में प्रेमपाल भार्मा कहते हैं कि ''फाँस खतरे की घंटी भी है और आत्महत्या के विरूद्ध दृढ़ आत्मबल प्रदान करने वाली चेतना और जमीनी संजीवनी का संकल्प भी।''[1]

इस उपन्यास में संजीव ने एक बड़ी ही जबरदस्त सामाजिक समस्या को उठाया है। गरीब मां–बाप अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए दिन–रात एक कर देते हैं। बच्चे पढ़ते भी हैं। लेकिन उनकी पढ़ाई गरीबी के कारण पूरी नहीं हो पाती है। इससे दो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं– एक तो उनकी पढ़ाई पूरी नहीं होती दूसरी वे बच्चे खेती से घृणा भी करने लगते हैं। इस कारण उनके सामने बेराजगारी की विकट समस्या भी दस्तक देने लगती है। सिंधु ताई अपने पति मोहन से कहती हैं कि ''तुम्हारा हर काम ही उल्टा होता है। बीटी बोए, धन्ना सेठ बनने के लिए फकीर बनकर रह गये। बच्चों को पढ़ाने लगे तो इतना न पढ़ा दिये कि दोनों ही हाथ से निकल गये।..... मैं.....? छुड़वा देती पढ़ाई। एकदम्म से। जो पढ़ाई, भोती से घृणा करना सिखाये, स्वार्थी बनाये, वैसी पढ़ाई को चूल्हे में न डालूँ।''[2]

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

मोहनदास इगतदास बाघमारे ने अपने दोनों बच्चों को पढ़ाने में कोई कसर न छोड़ी ताकि हमारे बच्चे रोजगारपरक हो जायेंगे तो हमारी गरीबी दूर हो जायेगी। लेकिन दोनों बच्चे एम0 ए0, पीएच0 डी0 करने के बाद भी नौकरी नहीं पाते। बच्चों की नौकरी के लिए पिता मोहनदास ने घूस देने के लिए खेत भी बेच दिया। फिर भी नौकरी न मिली। माता–पिता के सत्कर्मों का बच्चों ने यह सिला दिया कि वे दोनों घर से निकल गये। कई वर्श बीत जाने के बाद भी वे वापस नहीं आये। उन दोनों ने माता–पिता की खोज–खबर तक न ली। लानत है ऐसी पढ़ाई पर जो बच्चों को संस्कार–विहीन कर दे। माता–पिता जैसे–तैसे बच्चों का पालन–पोशण करते हैं, अपने भूखे पेट रहकर बच्चों का पेट भरते हैं, खेत बेच कर बच्चों को पढ़ाते लिखाते हैं कि हमारा बच्चा पढ़ लिख करके बुढ़ापे में हमारी लाठी बनेगा लेकिन ये बच्चे पढ़ लिख कर खेती से दूर भाग जाते हैं तथा बुढ़ापे में माँ–बाप को भी छोड़ देते हैं। क्या यही दिन देखने के लिए माँ–बाप बच्चों को पढ़ाते लिखाते हैं कि वे सयाना होने पर हमें छोड़ दें। अगर माता–पिता को पहले से ही ये बात पता होती तो कोई भी अपने बच्चों को पढ़ने के लिए नहीं भेजता। वह ि ाक्षा ही क्या जिसको ग्रहण करने से बच्चे संस्कारविहीन हो जायें। सिंधु ताई कहती हैं कि ''बेटों को इतनी फिक्र होती तो कोई खोज–खबर भी नहीं लेते कि हम जिन्दा हैं या मर गये, जिन्दा हैं भी तो किस हाल में? आखिर कौन सा गुनाह हो गया हमसे? नौ महीने मर–जर कर जन्म दिया। गू–मूत उठाया। भोत बेच–बेचकर पढ़ा दिया। पढ़ाई के लिए ही नहीं नौकरी के लिए भी घूस देने के लिए भोत बेचा। अब नौकरी दिलाना अपने बस की बात न थी तो क्या करते ? वाक्य पूरा होते–होते वह रो पड़ी।''[3]

उपन्यासकार संजीव ने इस उपन्यास में दहेज प्रथा नामक सामाजिक समस्या को भी उठाया है। दहेज की समस्या ने किस भाँति समाज में अपनी जड़ें फैला रखी है– इस उपन्यास में देखा जा सकता है। लड़की वाले लड़के के पिता से पूछते हैं कि आपकी कोई डिमाण्ड भी है तो लड़के का पिता कहता है कि ''अपनी तो कोई डिमाण्ड नही लेकिन आपका इतना देखना तो फर्ज बनता है कि आपकी मुलगी जहाँ जाये, सुखी रहे। रेट तो सबको मालूम है– एक हीरो होण्डा, एक लाख नगद।''[4] यानि समाज के लोग समाज मे किस तरह बगुला भगत बनकर हर बुरे कार्य करते रहते हैं– इसमें देखा जा सकता है। एक तरफ तो वे कहते हैं कि हमारी कोई माँग नहीं है और दूसरी तरफ ये भी बता देते हैं कि हमारे लड़के को ये–ये चाहिये। यह बुराई समाज में इस कदर व्याप्त हो गयी है कि समाज के लोगों का इस बुराई से उबर पाना नामुमकिन सा जान पड़ता है। भले ही लड़का किसी के यहाँ नौकर का काम करता हो लेकिन उसका पिता एक हीरो होण्डा व एक लाख नगद लेगा जरूर क्योंकि वह इन्हीं दहेज के पैसों से लड़के के लिए स्वयं का धंधा खोलने का मंसूबा जो पाल रखा है।

संजीव कहते हैं कि समाज में कई तरह के लोग रहते हैं। कुछ तो ऐसे होते हैं जिनकी बुनियाद सत्य से ही भ्रुरू होती है और सत्य पे ही खत्म। वे जीवन पर्यन्त कभी भी झूठ नहीं बोलते। भले ही उनकी

गिरेबान खतरे में पड़ जाये। सत्य ही उनका वास्तविक हथियार होता है। लेकिन समाज में कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो प्रतिदिन एक झूठ छिपाने के लिए सौ झूठ बोलते हैं। सत्य बोलने वाला व्यक्ति प्रायः व्यक्तित्व के समर में हार जाता है जबकि झूठ बोलने वाला व्यक्ति झूठा होते हुए भी विजय हासिल करता है। वाह रे समाज ! तेरी यह कैसी विडम्बना है। यह भी देखा गया है कि सत्यवादी व्यक्ति प्रायः गरीब ही होता है जबकि झूठ बोलने वाला व्यक्ति अमीर। यह समाज गरीबों पर वि वास न करके झूठ बोलने वाले अमीरों पर आँख मूँद करके वि वास कर लेता है। और चहुँओर गरीबों की खिल्ली उड़ाई जाती है, उनका मजाक बनाया जाता है।

बच्चे के पैदा होते ही उसके माँ–बाप दोनों की मृत्यु हो जाने पर उस अनाथ बच्चे को कलावती अपने घर लाती है। अपना भाई मानकर उसका पालन–पोशण भी करती है। लेकिन समाज में झूठ बोलने वाले लोग–वि ोश रूप से समाज के लिए आद र्ा बन बैठा मंदिर का पुजारी लोगों के कान भर देता है कि यह पुत्र छोटी और उसके प्रेमी अ ाोक का है। कलावती के पिता के कान भी इस अफवाह और बेइज्जती को सुनते–सुनते पक जाते हैं। सिपाही खुदाबख्श की बुरी निगाह भी कला पर ही रहती है। इन सबसे तंग आकर ि ाबू कह बैठता है कि भगवान व्यक्ति को हर बिमारी दे, गरीबी दे, चाहे जो कुछ देना चाहे दे लेकिन लड़की न दे क्योंकि ''.....लड़की का बाप होना दुनिया का सबसे बड़ा अभि ााप है।''[5]

संजीव ने अपने इस उपन्यास में किसानों की जिस सबसे विकट समस्या को उठाया है, उसका नाम है फाँस। फाँसी इस उपन्यास की धुरी है। सरकार ने नियम बनाया है कि किसानों को खेती से सम्बंधित कर्ज दिया जायेगा लेकिन उनके परिवार के भरण–पोशण तथा बच्चों की पढ़ाई–लिखाई से सम्बंधित कर्ज नहीं दिया जायेगा। किसान परिश्रम करके खेतों में अन्न उत्पन्न करने का प्रयास करता है। यदि बारि ा की मेहरबानी समय से हो तो अन्न उत्पन्न होते हैं और यदि वर्शा समय से न हो तो पूरी की पूरी फसल बर्बाद हो जाती है। किसानों के द्वारा बैंकों से लिया गया कर्ज दिन दूना रात चौगुना बढ़ता ही जाता है। अब किसानों के पास ये समस्या उत्पन्न हो जाती है कि वे कर्ज को कैसे भरें। क्योंकि दोबारा कर्ज किसानों को बैंक नहीं देता है। मजबूर होकर किसान सेठ–साहूकारों से अधिक ब्याज पर कर्ज लेता है। मगर जब दोबारा भी फसल मारी जाती है तो थक हार कर किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाता है। उपन्यासकार के भाब्दों में ''आज क्या घर, क्या मंदिर, क्या मस्जिद, क्या साहूकार की दुकान, सर्वत्र उसी की चर्चा है–कौन था क्यों फाँसी लगाई.....? अरे आदमी था भाई, भोतकारी! दो–दो बार फसल मारी गयी, कर्ज लिया, न दे पाया, मार लिया खुद को.....।''[6] इसी कर्ज के कारण ि ाबू, सुनील और मोहनदादा आदि भी आत्महत्या कर लेते हैं। ऐसी एक नहीं, दो नहीं, कई मौतों के अनगिनत किस्से हैं। सबके मरने के अलग–अलग तरीके होते हैं पर अंत एक ही होता है। उसके बाद भाुरू होती है पात्र–अपात्र की कहानी। कभी–कभी तो ऐसा भी होता है कि किसान पैदा हुए अन्न को बेचकर बैंक व

साहूकार का कर्जा भरता है। लेकिन भरण–पोशण के लिए उसके पास छटांक भर भी अन्न नहीं रह पाता। सरकारें कर्ज माफी का ऐलान भी करती हैं लेकिन कर्ज माफी तो केवल सरकारी बैकों के होते हैं। सेठों, साहूकारों से लिए गये कर्ज का क्या? अंततः वह लाचार होकर मृत्यु को ही वरण करता है। सरकारें तो यह भी नियम बनाती हैं कि अगर कोई किसान आत्महत्या करता है तो उसके परिवार को मुआवजा दिया जाय। लेकिन इसे सरकारी अधिकारियों की बदनीयति कहा जाय या फिर बेइमानी। बेहुदे आत्महत्या में भी पात्र–अपात्र का फर्क करने लगते हैं। आखिर मौत तो मौत होती है। चाहे वह किसान कर्ज से मरा हो या भूख से मरा हो या फिर पारिवारिक बोझ से उत्पन्न किसी अन्य कारण से । ि ाबू की पत्नी भाकुन कहती है कि ''इस दे ा का किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही जीता है और कर्ज में ही मर जाता है।''[7]

फाँस में संजीव ने भाास्त्रों पर चोट करते हुए कहा है कि जिस प्रकार भाास्त्रों में मरने के पूर्व जिन 18 बातों पर जोर दिया गया था, उनमें कर्ज चुकता करना भी था। इसे धर्म–कर्म, पितृ ऋण–मातृ ऋण वगैरह से जोड़ दिया गया था। ब्राह्मणों को छोड़कर सभी जाति के लोगों को इस ऋण को चुकता करना था। उसी प्रकार इस समय में कर्ज लेने के लिए गरीबों को भी कोई छूट नहीं थी। वहीं अगर व्यक्ति धनवान है, रसूखदार है, पूँजीपति है तो उसे करोड़ों अरबों–खरबों का कर्ज दे दिया जाता है। और वह धनवान व्यक्ति भाान से इनकम टैक्स डकारकर, धंधा चमकाकर भारत रत्न या भाीर्श पद तक प्राप्त कर लेता है। ऐसा ही हमारे दे ा का नियम–कानून है। कानून तो सिर्फ गरीबों के लिए होते हैं। अगर गरीब कानून तोड़ता है तो उसे उसकी भारी सजा भुगतनी पड़ती है, लेकिन अमीरों के लिए कानून तो एक खिलौनें की भाँति होता है। पूँजीपति लोग बुरे कर्म करने के बाद या कानून तोड़ने के बाद भी भाासन के चंगुल में नहीं फँसते क्योंकि उनके पास पैसा है। वे पैसे के बल पर कानून को भी खरीद लेते हैं। हालांकि गरीबों के लिए कानून बिकाऊँ नहीं होता लेकिन पूँजीपति वर्ग तो कानून का भाुद्ध सौदागर होता है। संजीव कहते हैं कि ''अमेरिका मक्का है भारत, स्पे ाली गुजरातियों और पंजाबियों का और बिजनेस या पैसा कमाना धरम । गलत–सही हो जाये तो धर्म की लाउण्ड्री तो है ही। भिगोया, धोया, हो गया। भाायद इसलिए ऐसे लोग परम धार्मिक होते हैं।''[8] भाायद इसीलिए भारतीय लोग परम धार्मिक होते हैं कि बिजनेस में या नौकरी में कोई भी गलत काम करेंगे तो धार्मिक क्रियाएँ या अनुश्ठान करके पवित्रता को प्राप्त कर लेंगे । क्या कहें कर्जा भी कमाल की चीज होता है–

अमीर के पास कर्जा बढ़ जाता है
तो अमीर दे ा छोड़ देता है।
और किसान का कर्जा बढ़ता है तो
किसान दुनिया छोड़ देता है।।

विजय माल्या, ललित मोदी, नीरव मोदी आदि का कर्जा बढ़ा तो ये सब दे ा से ही फरार हो गये। लेकिन किसानों के लिए कर्जा गले की फाँस बन जाता है। लेखक ि ाबू के माध्यम से कहता है कि ''रानी, ये कर्ज गले की फाँस है, निकाल फेंको'' और जिस दिन मैंने निकाल फेंका वह निहाल हो गया। गाँव भर में लड्डू बंटे, गीत गाते हुए बरसात में भी भींगते हुए नाचता रहा।''[9] ि ाबू की मृत्यु के बाद भाकुन अपनी दोनों पुत्रियों सरस्वती व कलावती की धूमधाम से भाादी करती है। छोटी (कला) की स्वच्छन्दता उसके परिवार वालों को पसन्द नहीं आती है। अतः वह घर से निकाल दी जाती है। वह सुनील काका के पुत्र विजयेन्द्र के घर रहने लगती है। विजयेन्द्र किसानों द्वारा किये जाने वाले आत्महत्या के कारणों की एक रिपोर्ट तैयार करके अमेरिका भेजता है। इसमें जहाँ एक ओर सीमित साधनों में अपनी लड़ाई लड़ता ि ाबू है तो दूसरी तरफ व्यवस्था से लोहा लेता सबके सामने एक आद ा स्थापित करता सुनील भी है। कुल मिलाकर इस उपन्यास में अि ाक्षा, अंधवि वास, सरकारी तंत्र व व्यवस्था के द्वारा किसानों के किये जाने वाले भाोशण को मूर्त रूप प्रदान किया गया है।

सन्दर्भ

1. प्रेमपाल भार्मा : फाँस का कवर पेज

2. संजीव : फाँस, वाणी प्रका ान, नई दिल्ली, 2015 पृश्ठ 41

3. वही, पृश्ठ 49

4. वही, पृश्ठ 94

5. वही, पृश्ठ 105

6. वही, पृश्ठ 14

7. वही, पृश्ठ 15

8. वही, पृश्ठ 228

9. वही, पृश्ठ 108